प्राक्कथन

हिन्दी साहित्य के छायावादोत्तर युग में प्रगतिवादी कविताओं के समानान्तर अनुभूति और अभिव्यक्ति की नयी व्यवस्था की जो कविता सामने आई, उसे 'नयी कविता' का नाम दिया गया। यह कविता एक 'ऊर्जावान संकल्प' की कविता है जो साहित्य तथा जीवन को प्रासंगिक और सार्थक बनाती है। वह युग की प्रकृति के अनुसार काव्य–दृष्टियों में क्रान्तिकारी परिवर्तन लाने का प्रयास करती है। वह आधुनिक जीवन–दृष्टि तथा सार्थक मानव–मूल्य प्रदान करती है और इस प्रकार मानव–मुक्ति के संघर्ष में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

वस्तुतः हिन्दी के वैतालिक भारतेन्दु ने पहली बार सही अर्थ में कविता को जीवन–यथार्थ से जोड़ने का उपक्रम किया था किन्तु पारम्परिक संस्कारों से पूर्णतः मुक्त नहीं हो सके थे। द्विवेदी युग के गुप्त जी ने अपने चरित्रो में मानवीय स्वरूप को एक निश्चित सीमा तक पकड़ा जरूर था लेकिन वहाँ भी आधुनिक मनुष्य उपेक्षित ही रहा। परिणामस्वरूप अभिव्यक्ति ने स्वयं ही रचना के भीतर संघर्ष किया जिसका सुफल यह हुआ कि डॉ0 नामवर सिंह के शब्दों में प्रगति और प्रयोग– दोनों के कल्पित कगारों को तोड़ती हुई एक समग्र नयी काव्य–धारा 'नयी कविता' के रूप में अवतरित हुई जो नये मूल्य–बोध, उर्वर रचना–शक्ति तथा आधुनिकता–बोध से सम्पन्न कविता का पर्याय बन गई।

'नयी कविता ने पूर्व प्रचलित परम्पराओं और रूढ़ियों को तोड़ा। उसकी समस्त अवधारणाओं को युग–जीवन की आवश्यकतानुसार ढाला, नये ढंग से परिभाषित करते हुए नयी अर्थवत्ता प्रदान की और स्वरूप–निर्धारण का एक नया मार्ग उन्मुक्त किया। इस स्वरूप में समाज या व्यक्ति सम्बन्धी किसी भी सिद्धान्त के प्रति दुराग्रह नहीं था बल्कि व्यक्ति को, व्यक्ति–सम्भव दृष्टि से देखने की प्रवृत्ति थी। उसमें व्यक्ति के भविष्य के प्रति आस्था थी, सामाजिकता का व्यावहारिक निर्वाह था तथा यथार्थ को पूरी ईमानदारी से अभिव्यक्त करने की बलवती आकांक्षा विद्यमान थी। उसमें शैली–शिल्प के माध्यमों तथा समाजोन्मुख स्वस्थ्य तत्वो के बीच अद्‌भुत संकलन और समन्वय वर्तमान था।

इसीलिए स्वातंत्र्योत्तर काल के नवाग्रहों एवं नई उद्‌भावनाओं को दृष्टि में रखते हुए हिन्दी की सन् 1950 के बाद की कविता को 'नयी कविता' का नाम दिया गया। यह कविता पूर्ववर्ती प्रयोगवादी कविता से भिन्न थी क्योंकि इस समय तक आते–आते रचनाकारों में प्रयोग की प्रवृत्ति कम हो गयी थी और काव्य में स्थित संस्थिति का भाव आ गया था। ये कवि विश्व–मानव की आधुनिक जीवनानुभूतियों के साथ नवीन जीवन–मूल्यों की स्थापना का आग्रह लेकर उपस्थित हुए थे। इन्होंने सामाजिकता और वैयक्तिकता को अलग–अलग खानों में न बाँटकर समाज को परिधि मानते हुए व्यक्ति को केन्द्र में स्थापित किया। उन्होंने गहरी संवेदनाओं को उद्दीप्त किया तथा अभिव्यक्तियों के नये आयाम उद्‌घाटित किये। इसके लिए उन्हें प्रतीकों का रास्ता चुनना पड़ा और सांस्कृतिक बिम्बों की अवतारणा करनी पड़ी। यद्यपि वे बिम्ब विशिष्ट एवं खण्डित थे। उन्होंने आधुनिकतावादी चेतना–परम्परा, युग–बोध और भविष्य–दृष्टि को संश्लिष्ट करके देखा। उन्हें मानव के भविष्य के प्रति गहरी निष्ठा एवं आस्था का भरोसा दिया। वे आत्मोपलब्धि द्वारा सर्जनात्मक व्यक्तित्व की खोजकर रहे थे। साथ ही वे कालहीन अमूर्त सत्य की अभिव्यक्ति तथा अस्तित्ववादी दर्शन के प्रभाव में मूल्यहीनता की बात भी कर रहे थे लेकिन उनमें जीवन मूल्यों की स्थापना का आग्रहमूलक भाव ही विशेष रूप से प्रबल था इसीलिए उन्होंने जहाँ छोटी, विश्लिष्ट चित्रों और खण्डित बिम्बों वाली कवितायें लिखी, वहीं नये जीवन –मूल्यों की तलाश में वे महाभारत तथा राम–कथा के कालजयी सन्दर्भों तक गये। फलस्वरूप 'अंधायुग' तथा 'शम्बूक–बध', 'संशय की एक रात' तथा 'महाप्रस्थान' जैसी कृतियाँ सामने आईं। प्रबन्ध–कल्पना से समन्वित ऐसी कृतियों को 'नयी कविता' का प्रबन्ध काव्य कहा गया जिनका प्रभाव दूसरे प्रकार की कविताओं की अपेक्षा चिरस्थायी जान पड़ता है।

डॉ0 धर्मवीर भारती में 'अंधायुग' में महाभारतकालीन स्थितियों, चरित्रों एवं घटनाओं के निमित्त सृजित प्रतीकों से वर्तमान संक्रान्ति युगीन भारतीय समाज की मर्यादाहीनता, अनास्था, घुटन, दर्द और शंकाओं पर गहरी चोट की गई तथा सामाजिक नैतिकता के नये मानों–प्रतिमानों के निर्माण का प्रश्न भी उठाया गया है। इसी प्रकार नरेश मेहता के 'संशय की एक रात' तथा 'महाप्रस्थान' में भी युद्ध के संकट तथा युद्ध के बाद की गहन होती

हुई निरर्थकता की तलस्पर्शी अभिव्यक्ति की गई।

कुँवर नारायण के 'आत्मजयी' प्रबन्ध काव्य में आत्मसाक्षात्कार के माध्यम से उस निर्वैयक्तिक व्यक्तित्व को उपलब्ध किया गया है जिसे भारतीय चिन्तन–परम्परा के अनुसार दार्शनिक कवि का 'परमसाध्य' कहा जा सकता है। वस्तुतः यह ऐसा काव्य–सत्य है जिसने मुझे पूर्णतः अनुप्राणित एवं अभिप्रेरित किया है। फलस्वरूप मुझे ऐसी आवश्यकता महसूस हुई कि 'नयी कविता' के प्रबन्ध काव्यों में अन्तर्निहित जीवन–दृष्टि तथा जीवन–मूल्यों का शोध–परक विश्लेषण किया जाय। प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध एक तरह से इसी अभिप्रेरणा की फलश्रुति है।

वस्तुतः समग्र रूप में 'नयी कविता' के स्वरूपगत विकास पर तथा इस विधा के विशिष्ट कवियों पर अलग–अलग शोध कार्य संख्या एवं गुणवत्ता– दोनों ही दृष्टियों से पर्याप्त मात्रा में हुए हैं लेकिन अधिकांश शोध–प्रबन्ध ऐसे हैं जिनमें 'नयी कविता' के स्वरूप, उसकी पृष्टभूमि, समाज–दृष्टि, आत्मसंघर्ष, काव्य–चेतना तथा काव्य–विमर्श के अनुसंधान का आधार बनाया गया है। दूसरे प्रकार के कार्यों में अज्ञेय, मुक्तिबोध, भारती, भवानी प्रसाद मिश्र, नरेश मेहता आदि नयी कविता के विशिष्ट कवियों के केन्द्र में रखकर मूल्यपरक विश्लेषण किया गया है।

'नयी कविता' के प्रबन्ध काव्यों को लेकर मेरी दृष्टि में डॉ0 विनोद गोदरे का ' आधुनिक प्रबन्ध काव्य– संवेदना का नया धरातल' तथा डॉ0 उमाकान्त गुप्त का 'नयी कविता के प्रबन्ध काव्य : जीवन दर्शन' नामक दो शोध–ग्रन्थ सही ढंग से लिखे गये हैं। डॉ0 विनोद गोदरे के ग्रन्थ में संवेदना के धरातल की तलाश मुख्य है जबकि डॉ0 उमाकान्त गुप्त के प्रबन्ध में शिल्पगत विवेचना। वस्तुतः जीवन–दृष्टि तथा मूल्यबोध ही 'नयी कविता' के कवियों का प्रमुख एवं प्रभावी स्वर है जिसका शोधपरक विवेचन अभी नहीं हुआ है। इसीलिए मैं 'नयी कविता' के कवियों के प्रबन्ध काव्यों का मूल्यपरक अध्ययन करना चाहती थी क्योंकि यही मूलाधार है जिससे 'नयी कविता' की आधुनिक साहित्य में एक विशिष्ट पहचान बनती है।

'नयी कविता' में छोटी कविताओं की संख्या अधिक है किन्तु कुछ ऐसी लम्बी कवितायें भी इस दौर में लिखी गई हैं जिनकी पर्याप्त चर्चा हुई है। इनमें अज्ञेय की 'असाध्य वीणा' और 'चक्रान्त शिला', मुक्तिबोध की 'ब्रह्मराक्षस' तथा अंधेरे में' और धूमिल की 'पटकथा' अत्यधिक प्रसिद्ध रचनायें हैं। इन लम्बी कविताओं पर भी शोध–कार्य हुए हैं लेकिन उनमें व्याप्त प्रबन्धात्मक सूत्रों की खोज अभी नहीं हुई है। मैंने अपने इस ——— शोध–प्रबन्ध में इन सभी लम्बी कविताओं की प्रबन्धात्मकता एवं उनमें अभिव्यक्ति जीवन–दर्शन एवं मूल्य–बोध की गवेषण में एक स्वतंत्र अध्याय प्रस्तुत किया है। आशा है, इस शोध की प्रविधि एवं मौलिक निष्कर्ष हिन्दी की सुधीजनों को पसन्द आयेंगे और यही मेरे श्रम की सार्थकता होगी।

मुम्बई प्रवास के दौरान पाटेकर कॉलेज की मेरी मित्र सीमा कणमकार ने मेरी भरपूर मदद की। मैं उनकी विशेष रूप से ऋणी हूँ क्योंकि उन्हीं के सौजन्य से मुझे एस0 एन0 डी0 टी0 विमेन यूनिवर्सिटी चर्चगेट मुम्बई, पुस्तकालय बाम्बे यूनिट चर्चगेट, बाम्बे यूनिवर्सिटी एवं कलीना पुस्तकालय पाटेकर कॉलेज गोरेगाँव से यथेच्छित पुस्तकें सन्दर्भ के लिए प्राप्त हुईं। मेरे श्वसुर द्वय सर्वश्री जी0 पी0 लाल एवं सी0 पी0 लाल का प्रोत्साहन मेरे लिए पाथेय बना रहा, मैं उनके उत्साह–बर्धन के बिना यह कार्य सम्पन्न नहीं कर सकती थी।

इस शोध की प्रस्तुति में मेरे शोध–निर्देशक ***डॉ0 उमाशंकर तिवारी*** *ने भरपूर सहयोग दिया है, मैं उनकी ऋणी हूँ। मेरे माता–पिता* ***श्रीमती प्रेमलता तिवारी/श्री माया शंकर तिवारी,*** *बड़ी माँ* ***श्रीमती रमा तिवारी,*** *भाई* ***डॉ0 सन्तोष कुमार तिवारी, अभिषेक कुमार तिवारी, अंकुर तिवारी,*** *भातृवधू* ***श्वेता तिवारी*** *एवं* ***शशि तिवारी*** *तथा मेरी प्रतिरूपा बहन* ***कुमारी कविता*** *का भी सक्रिय योगदान रहा है जिसे मैं कभी भूल नहीं सकती। मेरे पति* ***श्री माधव कृष्ण*** *दूर रहकर भी मुझे अभिप्रेरित करते रहे हैं, मैं उनके उत्साह–वर्धन से उपकृत हूँ। मेरे विभागाध्यक्ष डॉ0* ***जटाशंकर द्विवेदी*** *तथा मेरे सहकर्मी* ***डॉ0 शर्वेश पाण्डेय, डॉ0 कंचन राय*** *एवं* ***डॉ0 कमलेश*** *राय मेरे पथ–प्रदर्शक रहे हैं, मैं उन्हें नमन करती हूँ तथा अन्त में अपने प्राचार्य मेजर विष्णु बहादुर सिंह एवं पी0 जी0 कॉलेज के कम्प्यूटर विभाग के प्रमुख* ***श्री हर्ष नाथ पाण्डेय*** *के प्रति विशेष रूप से आभार प्रकट करती हूँ जिनकी अहेतुकी कृपा मेरे इस सद्प्रयास का बड़ा सम्बल रही है।*

शिखा तिवारी

शिखा तिवारी